पलवल में किसानों को एकीकृत पोषकतत्व प्रबंधन (INM) पर किया गया जागरूक, IARI के 'Farmer FIRST' प्रोजेक्ट के तहत एक दिवसीय किसान गोष्ठी आयोजित"

दाढ़ोता (पलवल), 24 सितम्बर 2025

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI), नई दिल्ली द्वारा संचालित *Farmer FIRST Project* के अंतर्गत दाढ़ोता गाँव, पलवल में आज एक दिवसीय किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का मुख्य विषय **एकीकृत पोषक प्रबंधन (Integrated Nutrient Management - INM)** रहा, जिसमें बड़ी संख्या में किसान भाई-बहनों ने भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत में **डॉ. सुभाश्री**, वैज्ञानिक (कृषि विस्तार संभाग, IARI), ने परियोजना के उद्देश्यों और एकीकृत पोषक प्रबंधन के महत्व पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि *Farmer FIRST Project* का मुख्य उद्देश्य किसानों को आधुनिक वैज्ञानिक तकनीक, स्थानीय संसाधनों के बेहतर उपयोग और पोषण सुरक्षा से जोड़ना है।

इसके बाद **डॉ. एस.एल. मीणा,** प्रधान वैज्ञानिक (सस्यविज्ञान संभाग, IARI) ने INM की अवधारणा पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने किसानों को समझाया कि जैसे मनुष्य को अच्छे स्वास्थ्य के लिए संतुलित आहार की आवश्यकता होती है, वैसे ही फसलों को भी संतुलित पोषण चाहिए। INM में गोबर की खाद, कम्पोस्ट, हरी खाद, जैव उर्वरक और आवश्यकतानुसार रासायनिक उर्वरकों का वैज्ञानिक उपयोग कर पैदावार बढ़ाई जा सकती है और मृदा को स्वस्थ रखा जा सकता है।

डॉ. डोलमनी, वैज्ञानिक (सूक्ष्मजीव विज्ञान संभाग, IARI) ने पराली प्रबंधन और *पूसा डीकंपोज़र* के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि यह तकनीक फसल अवशेषों को जलाए बिना 15-25 दिनों में जैविक खाद में बदल देती है, जिससे वायु प्रदूषण कम होता है और मिट्टी की उर्वरता भी बढ़ती है।

IFFCO (इफको) के प्रतिनिधि **श्री रविंदर** ने किसानों को आधुनिक उर्वरकों—*नैनो यूरिया* और *नैनो DAP*—के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि ये पारंपरिक उर्वरकों की तुलना में आधी मात्रा में प्रभावी हैं और मिट्टी व जल प्रदूषण को कम करने में सहायक हैं।

इसी क्रम में **सुश्री रूबी सिंह**, कृषि विकास अधिकारी, हरियाणा कृषि विभाग ने किसानों को विभिन्न सरकारी योजनाओं—*सॉइल हेल्थ कार्ड योजना*, *प्राकृतिक खेती मिशन*, *पराली प्रबंधन योजना* और *कृषक उत्पादक संगठन (FPO) योजना*—के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने किसानों को सरकारी अनुदानों और प्रशिक्षणों का लाभ उठाकर टिकाऊ खेती अपनाने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम में **परियोजना स्टाफ श्री शुभम रोहिल्ला** ने किसान प्रतिभागियों को *सब्जी बीज किट, पूसा डीकंपोज़र और जैव उर्वरक सैंपल किट* वितरित किए, ताकि किसान अपने खेतों में इनका परीक्षण कर सकें और बेहतर परिणाम प्राप्त कर सकें।

अंत में आयोजकों ने सभी विशेषज्ञों, अतिथियों और किसानों का आभार व्यक्त किया और किसानों से आग्रह किया कि वे आज सीखी गई तकनीकों को अपने खेतों में लागू करें तथा अन्य किसानों तक भी पहुंचाएं।

गोष्ठी का समापन इस संकल्प के साथ हुआ– **"स्वच्छ पर्यावरण, स्वस्थ मृदा और समृद्ध किसान।"**